संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ७ **भाषा : हिन्दी**
प्रकाशन दिनांक : १ अक्टूबर २०२५
वर्ष : ३५ अंक : ४ (निरंतर अंक : ३९४)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

बापू साक्षात् भगवत्स्वरूप हैं। संत-समाज हृदय से बापू से प्रेम करता है। हमसे जो भी हो सके हमें बापू के लिए करना चाहिए।

- श्रीमहंत रविन्द्र पुरीजी महाराज,
राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद
१३ मार्च २०२५ (उज्जैन, म.प्र.)

ब्रह्मचर्य विशेषांक

बच्चे-बच्चियाँ, युवक-युवतियाँ स्मार्टफोन में कामुकता भड़कानेवाले दृश्य देख के पतन के रास्ते जा रहे हैं। यह पूरे विश्व के आगे बड़ी भयंकर चुनौती है। क्या पता क्यों किसीका ध्यान नहीं जाता, मेरा तो जाता है इसलिए 'युवाधन सुरक्षा अभियान' चलवाया, 'वेलेंटाइन डे' की जगह 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' चालू किया।

- पूज्य बापूजी

परम श्रद्धेय पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के लिए मेरे अंतःकरण में इसलिए परम भाव है कि हिन्दुत्व की रक्षा के लिए उन्होंने अपना सब कुछ दाँव पर लगा दिया ।

– स्वामी श्री गोविंददेव गिरिजी, श्रीराम जन्मभूमि न्यास के कोषाध्यक्ष

१२ मार्च २०२५ (उज्जैन, म.प्र.)

सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए बापूजी का योगदान सदियों तक भुलाया नहीं जा सकता । उन्होंने कितने बच्चों को, युवाओं को संयम-सदाचार की राह पर अग्रसर किया है, मनुष्यता के लिए कितना बड़ा काम किया है !

– आचार्य कौशिकजी महाराज

संत आशारामजी बापू का जीवन राष्ट्र के प्रति समर्पित है । दुराचारी व्यक्ति भी जिनके पास पहुँचकर सदाचारी बन जाता है ऐसे बापू के ऊपर रेप का आरोप लगाना कितना हास्यास्पद है ! **– ब्रह्मर्षि हेमंत कश्यपजी महाराज, सुप्रसिद्ध भागवताचार्य, हरिद्वार**

जिन्होंने करोड़ों लोगों को ब्रह्मचर्य-पालन के मार्ग पर चला दिया वे ब्रह्मचर्य भंग कैसे कर सकते हैं ? यह तो बापूजी के साथ छल किया गया है । **– श्री धनंजय देसाई, संस्थापक व राष्ट्रीय अध्यक्ष, हिन्दू राष्ट्र सेना**

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : ३५ अंक : ४ (निरंतर अंक : ३९४)
प्रकाशन दिनांक : १ अक्टूबर २०२५
मूल्य : ₹ ७ आवधिकता : मासिक
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
भाषा : हिन्दी | आश्विन-कार्तिक, वि.सं. २०८२

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : विवेक सिंह चौहान
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर हमारी जिम्मेदारी नहीं रहेगी। **अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ['हरि ओम मैन्युफेक्चरर्स' (Hari Om Manufactureres) के नाम अहमदाबाद में देय] द्वारा ही भेजने की कृपा करें।**

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ६१२१०८८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ६१२१०७४२
९५१२०८१०८१ 'Rishi Prasad'
ashramindia@ashram.org
www.ashram.org www.rishiprasad.org
www.asharamjibapu.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	शुल्क
वार्षिक	₹ ७५
द्विवार्षिक	₹ १४०
पंचवार्षिक	₹ ३४०
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ७५०

विदेशों में

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ६००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ १२००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ ३०००	US $ 80
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६०००	US $ 200

Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

इस 'ब्रह्मचर्य विशेषांक' में...

❖ **ज्वलंत मुद्दा** ✲ यह हम सबका विषय है, मेरे अकेले का काम नहीं है ४
❖ **समसामयिक** ✲ ...तभी भारत विश्वगुरु माना जायेगा
- रा. स्व. संघ के सरसंघचालक श्री मोहन भागवत ५
❖ **जयंती विशेष** ✲ सबको खिलाने-पिलानेवाला सबके हृदय में छुपा है ६
❖ **ताजा खबर** ✲ लिव-इन रिलेशनशिप के साथी बन रहे एक-दूसरे की मौत के कारण - आदित्य ठाकुर ८
❖ **आप कहते हैं...** ✲ जो भी हो सके हमें बापूजी के लिए करना चाहिए
- रविन्द्र पुरीजी महाराज, राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद १०
❖ **वंदनीय है इन महापुरुष की सरलता, नम्रता व सत्संग-निष्ठा !** ११
❖ **पर्व विशेष** ✲ गाय का उपकार और मनुष्य का कर्तव्य १२
❖ **पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग** ✲ अंतर्यामी गुरुदेव करते पग-पग पर सावधान १४
❖ **जब तक मुख्य कर्तव्य नहीं साधा तब तक कहीं फँसना नहीं** १५
❖ **अद्भुत है ईश्वर की सत्ता व सामर्थ्य !** १५
❖ **समसामयिक** ✲ 'पॉर्नोग्राफिक सामग्री आदि के कारण बढ़ रहे हैं बलात्कार' १६
❖ **बड़ी खबर** ✲ कानून की पढ़ाई में शामिल हों वेद, महाभारत, रामायण आदि शास्त्र - श्री पंकज मित्तल, न्यायाधीश, सर्वोच्च न्यायालय १७
❖ **विद्यार्थी संस्कार** ✲ ऐसी जिज्ञासा हो तो हर बच्चा बन सकता है महान १८
✲ ...भोग से होती तबाही, भगवद्योग से मिलती ऊँचाई १९
✲ ब्रह्मचर्य-रक्षा हेतु प्रयोग १९
❖ **तेजस्वी युवा** ✲ संयम का सामर्थ्य २०
❖ **महिला उत्थान** ✲ सीताजी की नम्रता, परदुःखकातरता व अपनत्व २१
❖ **युवा जागृति समाचार**
✲ ...टी.वी., इंटरनेट, सोशल मीडिया छीन रहे किशोरों की मासूमियत २३
❖ **तत्त्व दर्शन** ✲ ...कैसे करें अपनी असंगता का अनुभव ? २४
❖ **संतों की हितभरी अनुभव-वाणी** २६
❖ **मन को ऊपर कैसे उठायें ?** - स्वामी अखंडानंदजी २७
❖ **धर्म जागृति समाचार** ✲ हिन्दू लड़कियों पर जाल, करोड़ों की विदेशी चाल २८
❖ **भक्तों के अनुभव** ✲ गुरुकृपा के प्रभाव से ३० वर्षों से ब्रह्मचर्य-व्रत २९
❖ **शरीर स्वास्थ्य** ✲ वीर्यरक्षा के ये उपाय अनमोल... ३०
✲ सात्त्विक, बलप्रद तथा पुष्टिदायी पेय ३१
❖ **छोटी उम्र में सेवा, सुनहरे भविष्य का राजमार्ग** ३२
❖ **एकादशी माहात्म्य** ✲ महापापनाशक एवं सम्पूर्ण कामना-पूरक व्रत ३३
❖ **अनमोल कुंजियाँ** ✲ जानिये किस लाभ के लिए कहाँ दीप जलाना चाहिए ? ३४
✲ कलह, क्लेश, रोग व शारीरिक दुर्बलता निवारण हेतु... ३४
❖ **आगामी पुण्यदायी तिथियाँ व योग** ३४

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

अनादि TV
रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे टाटा प्ले (चैनल नं. ११६१), एयरटेल (चैनल नं. ३७९) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबल

DIGIANA DIVYA JYOTI
रोज रात्रि १० बजे म.प्र. में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९)

यूट्यूब चैनल्स : Asharamji Bapu | सेवाकार्य भी Asharamji Ashram | Mangalmay Digital

डाउनलोड करें : Rishi Prasad App (ऋषि प्रसाद की ऑनलाइन सदस्यता हेतु), Rishi Darshan App (ऋषि दर्शन विडियो मैगजीन की सदस्यता हेतु) एवं Mangalmay Digital App

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक ने कहा :

'धर्म और अध्यात्म में उत्कर्ष से ही भारत विश्वगुरु माना जायेगा'

समसामयिक
Current affairs

संतभूमि भारत अपने अद्वितीय आध्यात्मिक ज्ञान के प्रभाव से अनादि काल से अब तक विश्व के सभी देशों का मार्गदर्शक रहा है। जर्मनी के सुप्रसिद्ध विद्वान मैक्स मूलर कहते हैं : ''यदि मुझसे पूछा जाय कि किस आकाश के नीचे मानव-मस्तिष्क ने अपनी सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं का सबसे अधिक विकास किया है, जीवन की बड़ी-से-बड़ी समस्याओं पर सबसे गहराई से विचार किया है और उनके समाधान खोजे हैं तो मैं भारत की ओर संकेत करूँगा।''

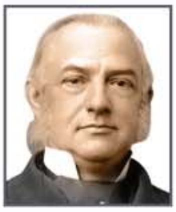

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहन भागवत ने हाल ही में कहा : ''हम ५,००,००० करोड़ डॉलर की इकोनॉमी भी बन जायें तो भी दुनिया को इससे कोई आश्चर्य नहीं होगा कारण कि ऐसे अनेक देश हैं जिन्होंने यह उपलब्धि हासिल की है । अमेरिका अमीर है, चीन भी अमीर बना है... कई चीजें हैं जो बाकी देशों ने प्राप्त की हैं, हम भी प्राप्त कर लेंगे किंतु दुनिया के पास आध्यात्मिकता और धर्म नहीं है जो हमारे पास है। दुनिया हमारे पास इसके लिए आती है । हमें हर क्षेत्र में प्रगति करनी चाहिए किंतु हमारा राष्ट्र तभी सही मायने में विश्वगुरु माना जायेगा जब हम धर्म और अध्यात्म में उत्कर्ष प्राप्त करेंगे।''

यह बात केवल भारत के हिन्दुत्ववादी ही नहीं कहते, ईसाई धर्म के अनुयायी पाश्चात्य विद्वान भी कहते हैं। अमेरिका के विद्वान लेखक मार्क ट्वेन ने लिखा है : 'धर्म के क्षेत्र में सब राष्ट्र दरिद्र हैं, भारत ही मिलियनेयर (करोड़पति) है।'

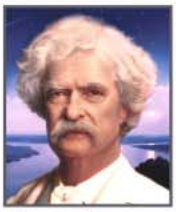

पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है : ''चीन की दीवार मशहूर है, कुवैत का पेट्रोलियम मशहूर है, अमेरिका के डॉलर मशहूर हैं लेकिन भारत के संत और भारत की संस्कृति मशहूर हैं । हमारी संस्कृति अब भी विश्वमानव को मंगलमय जीवन जीने की कला और मंगलमय देवत्व को जगाने की सुंदर रीत बताती है । हम भाग्यशाली हैं कि हमें सुगमता से संत मिलते हैं, सत्संग मिलता है। समाज की माँग है सत्संग, शांति। शास्त्रों में ऐसी-ऐसी युक्तियाँ हैं और संतों के जीवन में ऐसे-ऐसे अनुभव हैं कि जिनका लाभ लेकर समाज अब भी चैन की नींद सो रहा है । हजारों-लाखों की तादाद में चैन से सत्संग में बैठने की योग्यता भारतवासियों में अब भी है । यदि ब्रह्मवेत्ता गुरुओं, संत-महात्माओं का ज्ञान नहीं होता और भगवद्भक्ति का रसास्वाद नहीं होता तो हमारी हालत अमेरिका से भी बदतर होती । ग्रेट अमेरिका ने ग्रेट गिफ्ट दिया विश्व को - एड्स की बीमारी। और साधारण, सरल, सज्जन भारत ने दुनिया को दी छोटी-सी भेंट - हँसते-खेलते, खाते-पीते दुःख और सुख के सिर पर पैर रखकर आत्मा-परमात्मा को प्राप्त करने की कुंजियाँ।''

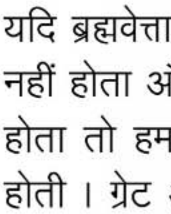

फ्रांस के प्रख्यात नॉवेलिस्ट व नौसेना अधिकारी पियेर लोटी

वंदनीय है इन महापुरुष की सरलता, नम्रता व सत्संग-निष्ठा !

साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज का महानिर्वाण दिवस : ३१ अक्टूबर

पूज्य बापूजी अपने गुरुदेव (ब्रह्मलीन पूज्यपाद भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज) के जीवन के संस्मरण एवं गुरु-सान्निध्य में हुई मधुमय अनुभूति को दर्शानेवाला एक बड़ा ही सुंदर प्रसंग सत्संग में बताते हुए कहते हैं :

आओ श्रोता तुम्हें सुनाऊँ
महिमा लीलाशाह की ।
सिंध देश के संत शिरोमणि
बाबा बेपरवाह की ॥...

मेरे गुरुदेव को २० साल की उम्र में ईश्वर-साक्षात्कार हो गया, १६ साल की उम्र में तो अच्छी तरह से समाधि लग जाती थी। १२ साल की उम्र में तो खाली बारदाने अनाज आदि से भर गये, इतना संकल्पबल ! ऐसे महापुरुष ८४ साल की उम्र में भी बिना सत्संग के भोजन नहीं करते थे । एकांत में रहते थे नैनीताल के जंगल में तब भी, कोई सत्संग सुननेवाला नहीं है तो मेरे को और दूसरे दो को बुलाते । योगवासिष्ठ महारामायण हो, उपनिषद् हो... मैं पढ़ता और गुरुदेव सुनते फिर कृपा करके कभी थोड़ी व्याख्या भी सुना देते।

जैसे स्नान मनुष्य को स्वच्छ रखता है ऐसे ही सत्संग हमारे मन को स्वच्छ रखने का एक अद्भुत साधन है । कुछ लोग सत्संग सुनते-पढ़ते हैं तो वह लिखकर दूसरे को सुना देते हैं । नहीं-नहीं, मेरे गुरुदेव तो सत्संग सुनते-सुनते विश्राम पाते थे । मेरे गुरुदेव जब ८९ साल के हुए, मैंने अपनी आँखों से देखा कि हरिद्वार में एक जगह पर 'पंचदशी' का सत्संग चलता था, २०-२५ श्रोता होते थे। गुरुदेव अगर प्रवचन करते तो हजारों लोग उनके चरणों में आ जाते लेकिन गुरुदेव जहाँ पंचदशी का सत्संग चलता था वहाँ जाकर बैठ जाते थे । सत्संग करनेवाले महामंडलेश्वर को जब पता चलता कि ये श्री लीलाशाहजी बापू हैं तो वे उठकर बुलाते : ''आइये-आइये, गद्दी पर बैठिये ।'' अपनी गद्दी पर बिठाने लगते ।

गुरुदेव बोलते : ''ठीक है, ठीक है ।''

गुरुदेव सामने बैठ जाते श्रोताओं के साथ । कितनी बहादुरी ! कितनी सरलता !

मानो गुरुकृपा का धक्का मिल गया

हमारे गुरुदेव का एक शिष्य था भोजराज । उपलेटा (सौराष्ट्र) में वह रहता था, खेती करता था ।

संत-महापुरुषों को एकांत, जंगल और शुद्ध जल ये तीन चीजें मिल गयीं तो वे प्रसन्न हो जाते हैं ।

भोजराज सिंधी धंधेवाला था परंतु उसको पता पड़ गया था कि स्वामीजी आत्मज्ञानी हैं । फिर उसने धंधा-वंधा छोड़ दिया और उपलेटा में बगीचा ले लिया कि 'खेती-बाड़ी करूँगा । बगीचे में निवास के निमित्त साल में एक-दो बार साँईंजी मेरे यहाँ आयेंगे, ५-१० दिन रहेंगे ।' उसने उस बगीचे में एक गुफा बना दी ।

उस समय मैं डीसा (गुजरात) में रहता था । एक बार मेरे को पता चला कि स्वामीजी उपलेटा आये हैं तो मैं डीसा से भागा स्वामीजी के दर्शन

सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश ने कहा :
'कानून की पढ़ाई में शामिल हों वेद, महाभारत, रामायण आदि शास्त्र'

बड़ी खबर

हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश पंकज मित्तल ने भोपाल-स्थित नेशनल लॉ इंस्टीट्यूट यूनिवर्सिटी में आयोजित एक कार्यक्रम में अपने सम्बोधन में कहा : ''अब समय आ गया है कि लॉ स्कूल अपने पाठ्यक्रम में प्राचीन भारतीय न्यायिक और दार्शनिक परम्पराओं को विधिवत् सम्मिलित करें। वेद, स्मृतियाँ, प्राचीन अर्थशास्त्र तथा महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्य केवल सांस्कृतिक कृतियाँ नहीं हैं, इनमें न्याय, समानता, शासन, दंड, मेल-मिलाप तथा नैतिक कर्तव्य पर गहन चिंतन भी समाविष्ट है । भारतीय न्यायिक तर्कशास्त्र की जड़ों को समझने के लिए इनका अध्ययन अनिवार्य है।

विद्यार्थियों को न्याय और समानता की अवधारणाएँ पश्चिम से उधार लिये गये सिद्धांतों के रूप में नहीं, बल्कि भारत के प्राचीन न्यायिक तर्कशास्त्र में निहित विचारों के रूप में पढ़ानी चाहिए। न्याय-व्यवस्था में संविधान के साथ-साथ गीता, वेद और पुराण भी होने चाहिए। इसी संदर्भ में हमारी न्याय-व्यवस्था को काम करना चाहिए। तब मेरा विश्वास है कि हम अपने देश के प्रत्येक नागरिक को न्याय दे पाने में सक्षम होंगे।

यह कोई अतीत-चिंतन का एक प्रकल्प नहीं है बल्कि यह तो मूल से जुड़ा हुआ नवीनता का प्रकल्प है। यह उस धारणा को और सुदृढ़ करेगा कि भारतीय संवैधानिकता केवल आयातित व्यवस्था नहीं है बल्कि यह हमारी सभ्यतागत विरासत का जीवंत संविधान है। कल्पना कीजिये वकीलों व न्यायाधीशों की ऐसी पीढ़ी की जो अनुच्छेद १४ को केवल उधार लिये गये समानता के सिद्धांत के रूप में न देखे बल्कि समता के मूर्त रूप में देखे, जो पर्यावरणीय कानून को केवल कानूनी प्रावधानों की दृष्टि से न देखकर वेदों में वर्णित प्रकृति के प्रति श्रद्धा, आदरभाव की दृष्टि से देखे, जो 'वैकल्पिक विवाद समाधान'★ को मनुस्मृति आदि शास्त्रों में उल्लिखित पंचायत परम्पराओं की निरंतरता माने और जो संवैधानिक नैतिकता को प्राचीन राजधर्म की आधुनिक अभिव्यक्ति के रूप में समझे ।

भारतीय न्याय की कहानी १९५० से प्रारम्भ नहीं हुई, इसका मूल कहीं अधिक प्राचीन है फिर भी अद्भुत रूप से स्थायी है। हमारी सभ्यतागत समझ में न्याय धर्म का ही मूर्त स्वरूप है - एक ऐसा सिद्धांत है जो नैतिक आचरण, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा शक्ति के न्यायसंगत उपयोग को समेटे हुए है। यह सुनिश्चित करना न्यायालय की भूमिका है कि न्याय का राजनीतिक सुविधा के लिए बलिदान न किया जाय और कानून का शासन (rule of law) शक्ति के शासन (rule of power) में परिवर्तित न हो ।

धर्म 'कानून' शब्द से पूर्ववर्ती है । जहाँ पश्चिमी न्याय प्रणालियाँ प्रायः कानून और नैतिकता के बीच कठोर रेखा खींचती हैं (अर्थात् दोनों को अलग मानती हैं), वहीं प्राचीन भारतीय न्यायशास्त्र ने धर्म को एक ऐसा एकीकृत सिद्धांत माना जो धार्मिकता, न्याय, कर्तव्य और सामंजस्य को समाहित करता है।'' ❐

★ विवादों को अदालत के बाहर बातचीत, सुलह, मध्यस्थता तथा पंच निर्णय द्वारा सुलझाने की पद्धति।

संयम का सामर्थ्य

– पूज्य बापूजी

चरित्रबल ही बल है । चरित्रबल के साथ ब्रह्मबल प्रकट होता है । चरित्रबल नहीं है तो ब्रह्मबल नहीं प्रकट होगा ।

यौवनकाल में जिनकी कमर कमजोर हो जाती है, धातु निकल जाती है उनके लिए कोई महान कार्य करना सम्भव ही नहीं है । अब भी जिन-जिन लोगों के जीवन में यौवन के समय की सुरक्षा है उन्हींकी वाणी में प्रभाव होता है अथवा उन्हींके ध्यान-भजन में बरकत आती है। **वीर्यनाश सर्वनाश, वीर्यरक्षा सर्वरक्षा ।** टी.वी. में, फिल्मों में, वेबसाइटों पर सत्यानाश करने के (कामवासना भड़कानेवाले) दृश्य ज्यादा दिखाये जाते हैं, जिससे निस्तेज प्रजा पैदा हो रही है, मति निस्तेज हो रही है । खैर, भगवान सबका मंगल करें । 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' पुस्तक पढ़ना और अमल करना, 'ईश्वर की ओर' पुस्तक पढ़ना ।

संयम में अद्भुत सामर्थ्य है । जिसके जीवन में संयम है, ईश्वरोपासना है उसका जीवन सहज में ही महान हो जाता है ।

संयम में अद्भुत सामर्थ्य है । जिसके जीवन में संयम है, ईश्वरोपासना है उसका जीवन सहज में ही महान हो जाता है ।

एक फौजी अफसर था । ध्यान योग शिविर में आ गया, ध्यान का जरा रंग लग गया । नामदान (मंत्रदीक्षा) तो नहीं लिया था उसने, एम.ए. पढ़ा था । मेरे को बोला : ''बाबा ! पहले तो हम ऑफिस के खुद की जिम्मेदारी के काम दूसरों के जिम्मे डाल देते थे, करवा लेते थे पर अभी तो मैं तीन लोगों का काम करता हूँ और थकान भी नहीं होती । जब से शिविर में ध्यान में आ के बैठा और यौवन-सुरक्षा की महिमा समझी तब से मुझमें अद्भुत बल आ गया । अब शराब, मांस का सेवन भी छोड़ दिया । रूखी रोटी खा लेता हूँ या तो दाल बनती है तो ले लेता हूँ । मेरा स्वास्थ्य भी बढ़िया हो गया ।'' यह है वीर्य की रक्षा ! नहीं तो कितना भी खाओ, कितने भी हलवे बनाओ, गर्मियों के, सर्दियों के पाक बनाओ, कितना भी खाते रहो लेकिन 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' पुस्तक का अध्ययन नहीं किया, संयम नहीं रखा तो वैसे ही गाल बैठे रहेंगे । ब्रह्मचारी लोग तो दिन में एक समय खाते थे, बड़े तेजस्वी होते थे और आज कई लोग तीन-तीन समय खाते हैं फिर भी देखो तो आँखें घुसी हुई हैं अंदर, गाल बैठे हुए हैं । सब निकल जाता है बन-बन के ओज-तेज । ज्यादा खाने से व्यक्ति बलवान, पहलवान होता है इस बात में कोई दम नहीं है ।

शाकाहारी राममूर्ति ने संयम किया तो कितने बलवान, पहलवान हो गये ! सिर्फ खुराक नहीं मिलती है इसलिए कोई जवान कमजोर है ऐसी बात नहीं है । जवानों की कमजोरी का मूल कारण है नशीली वस्तु, चाय-कॉफी, शराब, ड्रग्स (नशीली दवाइयों) का सेवन अथवा रात्रि में देर तक जगना, सुबह देर तक सोते रहना, अश्लील दृश्य देखना और असंयमी जीवन के कारण होनेवाली धातु की दुर्बलता ।

संत नरसिंह मेहता बोलते हैं :

रात रहे जाहरे पाछली खटघडी,
साधु पुरुषने सूइ न रहेवुं,
निद्राने परहरी, समरवा श्रीहरि,
एक तुं, एक तुं, एम कहेवुं.

इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने बजायी खतरे की घंटी :

टी.वी., इंटरनेट, सोशल मीडिया छीन रहे किशोरों की मासूमियत

स्मार्ट फोन, सिनेमा, टी.वी. आदि के माध्यम से बाल, किशोर व युवा पीढ़ी का हो रहा चारित्रिक पतन समस्त विश्व के लिए एक बड़ी चुनौती बन चुका है। पिछले दिनों इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने इसका संज्ञान लेते हुए कहा : 'टी.वी., इंटरनेट और सोशल मीडिया किशोरों के संवेदनशील मनों पर विनाशकारी प्रभाव डाल रहे हैं और बहुत कम व कोमल वय में उनकी मासूमियत छीन रहे हैं । इस न्यायालय को यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं है कि टी.वी., इंटरनेट और सोशल मीडिया जैसे दृश्यात्मक माध्यमों के किशोरों पर पड़ रहे घातक प्रभाव को रोकने के लिए इन माध्यमों पर कोई नियंत्रण नहीं हो रहा है और न ही यह प्रतीत होता है कि सरकार इन पर नियंत्रण कर सकती है कारण कि इनसे जुड़ीं प्रौद्योगिकियों का अनियंत्रणीय स्वभाव है।'

कुछ वर्ष पहले इसी संदर्भ में बॉम्बे हाईकोर्ट ने भी महत्त्वपूर्ण टिप्पणी की थी : 'यह एक सर्वमान्य आदर्श है कि बच्चे मानसिक और शारीरिक क्षमताओं में आश्रित और अपूर्ण होते हैं तथा उन्हें मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। सम्भवतः आरम्भ में टी.वी. जैसे बहुदृश्यात्मक माध्यम, उसके बाद समस्त पृथ्वी का भक्षण करनेवाले इंटरनेट और अंततः सोशल मीडिया ने और भी घातक रूप से, बच्चों को (विशेषकर किशोरों को) वयस्क जगत में छलाँग लगाने पर विवश कर दिया है । प्रायः यह एक क्रैश लैंडिंग होती है, जिसके विनाशकारी परिणाम होते हैं। अतः बचपन की मासूमियत इसका शिकार बनती है ।'

उचित मार्गदर्शन के अभाव में किशोर-किशोरियाँ, युवक-युवतियाँ कामुक व हिंसात्मक दृश्य देख के अपना जीवन अपने ही हाथों से बरबाद कर रहे हैं। भावी पीढ़ी का वर्तमान जीवन व भविष्य अंधकार की ओर जाता देख पूज्य बापूजी का हृदय द्रवित हो जाता है । पूज्यश्री कहते हैं : ''स्मार्ट फोन, सिनेमा, टी.वी. आदि ने एक बड़ा खतरा पैदा कर दिया कि बच्चे माफियागिरी के, कामुक या और कोई भद्दे दृश्य देखते-देखते ऐसी घिनौनी हरकतें करने लगते हैं... क्या-क्या करते हैं वह मैं बोल नहीं सकता ।

अखबारों और टी.वी. के द्वारा तुम जानते होगे कि विदेश में ९ साल के फलाने बच्चे ने बंदूक ले जा के ७ वर्ष की अपनी सहपाठिनी कन्या को शूट कर दिया । वह बच्चा घर में तो नहीं सीखा था कि किसी कन्या का मर्डर कर देना चाहिए, स्कूल में भी नहीं सीखा था तो कहाँ से सीखा ? हिंसक दृश्यों से । १२ साल का लड़का और ११ साल की लड़की - सम्भोग किया और माँ-बाप बन गये।

भोगवाद व दुष्प्रवृत्तियों को बढ़ावा देनेवाली यह आँधी अब भारत में भी आ रही है।

घिनौने दृश्य देखने से आनेवालीं पीढ़ियों का सत्यानाश हो रहा है । अश्लील (पॉर्न) वेबसाइट्स पर, इधर-उधर लड़के-लड़कियाँ मजा लेने के बहाने से न जाने कैसे-कैसे दृश्य देखकर तबाही की तरफ जाते हैं ! मैं तो यह मानता हूँ कि १२-१५ से २५ वर्ष तक की जो उम्र है वह उम्र

जो बुद्धि को राग-द्वेष में, आसुरी कर्मों में लगाते हैं वे मनुष्यों में अधम हैं।

धर्मांतरण का आतंक
हिन्दू लड़कियों पर जाल, करोड़ों की विदेशी चाल

धर्म जागृति समाचार

बलरामपुर (उ.प्र.) में पकड़े गये जलालुद्दीन उर्फ छांगुर जैसे संगठित गिरोह के पर्दाफाश से साफ पता चलता है कि किस तरह भारत में योजनाबद्ध तरीके से हिन्दुओं को कमजोर करने का षड्यंत्र चल रहा है। छांगुर के गिरोह के लड़के खुद को हिन्दू बता के सोशल मीडिया आदि माध्यमों से हिन्दू लड़कियों को प्यार में फँसाकर उनका धर्मांतरण कराते थे।

छांगुर प्रकरण का संज्ञान लेते हुए सर्वोच्च न्यायालय के अधिवक्ता अश्विनी उपाध्याय कहते हैं : ''जलालुद्दीन उर्फ छांगुर का भारत के लगभग ६०० जिलों में नेटवर्क है और इन सभी जिलों में उसने लगभग ४०००-५००० लोगों की टोली बना रखी थी। इन लड़कों का एक ही काम है स्कूल, कॉलेज, ऑफिसों आदि के आसपास घूमना और वहाँ पर पहचान करके हिन्दू लड़कियों को अपने जाल में फँसाना।

छांगुर ने ब्राह्मण, क्षत्रिय और सिख परिवार की बेटियों का धर्मांतरण का मूल्य रखा था १५-१६ लाख रुपये। पिछड़ी जाति की बेटियों का मूल्य रखा था १०-१२ लाख रुपये और अन्य जातियों की बेटियों का मूल्य ८-१० लाख रुपये रखा था।

अगर ब्राह्मण की बेटी को कोई पटा के लायेगा, उसको धर्मांतरित करेगा तो उसे १५ लाख रुपये मिलेंगे। साल में दो लड़कियों को भी किसीने पटा लिया तो ३० लाख रुपये हो गये। अच्छी-खासी नौकरी करने पर भी साल में ३० लाख रुपये कमाना मुश्किल होता है।

भारत को बरबाद करने के लिए छांगुर के पास २०० करोड़ बैंकों के द्वारा विदेशों से और लगभग ३०० करोड़ अवैध हवाला चैनलों (माध्यमों) द्वारा आये हैं।

विदेश से हो रही थी फंडिंग

साल में ५०,००० करोड़ रुपये भारत को बरबाद करने के लिए आ रहे हैं। छांगुर की बात करें तो ५०० करोड़ रुपये की फंडिंग का अब तक पता चल चुका है। २०० करोड़ बैंकों के द्वारा विदेशों से आये हैं और लगभग ३०० करोड़ अवैध हवाला चैनलों (माध्यमों) के द्वारा भारत आये हैं।

भारत में यह इकलौता छांगुर नहीं है, हर जिले में ऐसे १-२ छांगुर तो मिल ही जायेंगे। बस उन्हें खोजने की जरूरत है। इस छांगुर का नार्को, पॉलीग्राफ, ब्रेन मैपिंग टेस्ट करेंगे तो पता चलेगा कि अब तक इसे कौन-कौन सुरक्षित कर रहा था।

चीन में, दुबई में कोई छांगुर ऐसा काम क्यों नहीं करता ? सिंगापुर में ऐसा छांगुर क्यों नहीं पैदा होता ? आखिर यह छांगुर भारत में ही क्यों पैदा हुआ ? क्योंकि हमारे देश में छांगुर जैसों को कानून का कोई खौफ ही नहीं है। देश में ऐसा कानून ही नहीं है कि छांगुर जैसों को फाँसी दे सकें या उसकी १००% प्रॉपर्टी जब्त कर सकें।''

विदेशों से आ रही भारी-भरकम फंडिंग,

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

वीर्यरक्षा के ये उपाय अनमोल, जो आजमाता वह होता निहाल

(पूज्य बापूजी के सत्संग से)

योगाभ्यास अथवा साधना में सफल होने के लिए ब्रह्मचर्य की परम आवश्यकता बताते हुए भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं :

प्रशान्तात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः ।
मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः ॥

'योगी को प्रशांतचित्त, निर्भय, ब्रह्मचारी के व्रत में स्थित हो के और मन को संयत करके मेरे ही में चित्त लगाकर एवं मुझको ही अपना परम पुरुषार्थ समझते हुए योगयुक्त हो के बैठना चाहिए।' (गीता : ६.१४)

अब ब्रह्मचर्य-व्रत की बात आती है तो एक तो ब्रह्म में चित्त विचरण करे उसका नाम भी ब्रह्मचर्य है। दूसरा कि तुम्हारे शरीर की जो ७वीं धातु है, जिसे वीर्य कहते हैं, उसकी रक्षा करना भी ब्रह्मचर्य है। तो वीर्यरक्षा के कुछ उपाय हैं :

(१) जो तली हुई चीजें खाते हैं, ज्यादा मिर्च खाते हैं अथवा जो चाय-कॉफी खाली पेट पीते हैं या ज्यादा पीते हैं उन लोगों का वीर्य पतला हो जाता है। तो इन चीजों से बचा जाय। चाय-कॉफी तो वैसे भी हानि करती है लेकिन खाली पेट तो दुश्मन को भी नहीं पिलानी चाहिए।

(२) स्नान करते समय थोड़ी देर कटिस्नान किया जा सके ऐसा घर में स्नानागार हो, टब हो अथवा नदी, तालाब - जहाँ कहीं मौका मिले, नाभि से नीचे तक का भाग पानी में रहे इस प्रकार थोड़ी देर बैठा जाय और 'मेरा ब्रह्मचर्य मजबूत हो' इस उद्देश्य से बैठे तो आपके ब्रह्मचर्य की रक्षा होती है।

(३) तुलसी के पत्ते ब्रह्मचर्य की बहुत रक्षा करते हैं। तुलसी के पत्तों के सेवन से ८०० प्रकार की बीमारियों पर असर होता है। सुबह खाली पेट तुलसी के ५ पत्ते चबाकर थोड़ा पानी पी लिया जाय। यह प्रयोग भी वीर्य को मजबूत करता है और जल्दी से जीवनशक्ति (वीर्य) का नाश नहीं होता। (रविवार को तुलसी-पत्र न लें।)

(४) ब्रह्मचर्य की अच्छी-अच्छी पुस्तकें पढ़ने से भी वीर्य की रक्षा में मदद मिलती है।

(दिव्य प्रेरणा-प्रकाश★, यौवन सुरक्षा भाग-२★, निरोगता के साधन★ आदि पुस्तकें ब्रह्मचर्य-पालन हेतु विशेष उपयोगी हैं।)

(५) आपका कब और किस नथुने से श्वास चल रहा है वह शरीर में बहुत महत्त्व रखता है, काम आता है। आपका दायाँ स्वर (नथुना) अर्थात् सूर्यनाड़ी चल रही है और उस समय आप पेय पदार्थ पियो तो आपका वीर्य पतला हो जाता है और शक्ति (वीर्य) का जल्दी नाश होता है। पेय पदार्थ पीना हो तो कौन-सा स्वर चल रहा है उसको जरा जाँच लो। यदि दायाँ स्वर चलता हो और तुम्हें पेय पदार्थ पीना है तो उस समय दायाँ नथुना बंद करके बायाँ नथुना चालू करके पियो तो तुम्हारे ब्रह्मचर्य की रक्षा होती है। जब भोजन करते हो उस समय दायाँ स्वर चलता हो तो भोजन जल्दी पच जायेगा।

भोजन के समय यदि दाहिना स्वर चालू नहीं हो तो उसको चालू कर दो। उसकी विधि : वाम (बायीं) कुक्षि में अपने दाहिने हाथ की मुट्ठी रखकर कुक्षि को जोर से दबाओ या बायीं करवट लेट

★ ये संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती हैं।

घर-घर कैलेंडर 'दिव्य दर्शन' अभियान (वर्ष २०२६)

टेबल कैलेंडर

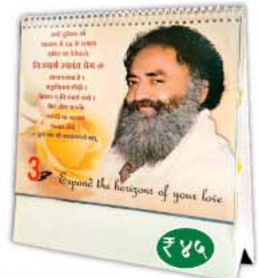

कर्मयोग दैनंदिनी (डायरी)

साधकगण एवं युवा सेवा संघ के भाई इस अभियान के अंतर्गत साधकों, मित्रों, रिश्तेदारों एवं परिचितों के घर जाकर उन्हें दीवाल दिनदर्शिका (wall calendar), पॉकेट कैलेंडर व डायरी पहुँचाने की सेवा का लाभ लें।

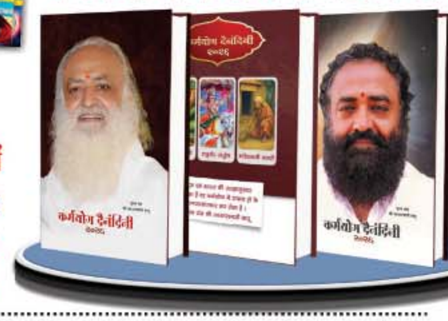

प्राप्ति : संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों पर तथा श्री योग वेदांत सेवा समितियों एवं साधक-परिवारों के सेवा केन्द्रों पर। ऑनलाइन ऑर्डर हेतु : www.ashramestore.com/calendar सम्पर्क : (०७९) ६१२१०७३२ (साहित्य विभाग), ६१२१०७६१ (युवा सेवा संघ मुख्यालय)

विशेष : प्रति कैलेंडर मूल्य ₹ १५ मात्र। २ कैलेंडर लेने पर ₹ ५ की आकर्षक छूट के साथ आपको देने हैं मात्र ₹ २५!
२५० या इससे ज्यादा कैलेंडर का ऑर्डर देने पर आप अपना नाम एवं फर्म, दुकान आदि का नाम-पता छपवा सकते हैं।
२५० से ९९९ तक छपवाने पर मूल्य ₹ १३ तथा १००० या उससे अधिक छपवाने पर मूल्य ₹ १२.५० प्रति कैलेंडर रहेगा।

श्रेष्ठ बल्य रसायन अश्वगंधा चूर्ण व टेबलेट

ये सप्तधातु, विशेषकर मांस व वीर्य वर्धक एवं बल व पुष्टि वर्धक श्रेष्ठ रसायन हैं। ये स्नायुओं व मांसपेशियों को ताकत देते हैं, वात-शमन व कदवृद्धि करते हैं। धातु की कमजोरी, शारीरिक दुर्बलता आदि के लिए ये रामबाण औषधियाँ हैं।

आँवला भृंगराज केश तेल

यह बालों का झड़ना, असमय सफेद होना, रूसी, सिरदर्द, मस्तिष्क की कमजोरी आदि समस्याओं को दूर करता है। बालों की जड़ों को मजबूत करता है व उनको बढ़ाकर उनमें चमक लाता है। दिमाग को ठंडा रखता है व स्मरणशक्ति को बढ़ाता है।

स्वच्छ और मजबूत दाँतों व स्वस्थ मसूड़ों के लिए

इन औषधियों से पायें अनेक लाभ :

* दाँतों और मसूड़ों के दर्द को दूर कर उन्हें बनायें मजबूत। * दाँतों का हिलना, उनमें कीड़े लगना, छिद्र होना, मैल जमना, सड़न होना, खून निकलना आदि में लाभदायी। * मसूड़ों में सूजन, पीब निकलना, मुँह से दुर्गंध आना, मुँह के छाले तथा जिह्वा, तालू और होंठों के सभी रोगों में लाभदायी।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्रीप्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ९४२८८५७८२०. ई-मेल : contact@ashramestore.com

गुरुवर से पाकर सत्प्रेरणा, बाँटा संस्कृति का प्रसाद
महिला उत्थान मंडल का अनुपम रक्षाबंधन

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2024-26
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2026)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/24-26
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st Oct 2025

श्री ब्रजेश पाठक, उपमुख्यमंत्री, उ.प्र.

श्रीमती भानुबेन बाबरिया, महिला एवं बाल कल्याण मंत्री, गुज.

श्री मुलुभाई बेरा, पर्यटन मंत्री, गुज.

श्री सतीश महाना, विधानसभा अध्यक्ष, उ.प्र.

श्री विकास सहाय, डी.जी.पी. (गुज.)

श्री हर्ष संघवी, गृह राज्यमंत्री, गुज.

श्री अवधेश गुप्त, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, गौ-रक्षा विभाग, वि.हि.प.

दिल्ली (सी.आर.पी.एफ.)

जालंधर (सी.आर.पी.एफ.)

अमरावती, महा. (एस.आर.पी.एफ.)

अहमदाबाद (आर.ए.एफ.)

दमण (आई.सी.जी.)

जमशेदपुर (आर्मी)

रायपुर, छ.ग. (सी.आर.पी.एफ.)

धमयाल, जम्मू-कश्मीर (आई.टी.बी.पी.)

मेरठ, उ.प्र. (पुलिस)

भुवनेश्वर (फायर हेडक्वार्टर)

उदयपुर, राज. (बी.एस.एफ.)

राजकोट (एन.सी.सी.)

लखनऊ (कारागृह)

अलवर, राज. (कारागृह)

बदायूँ, उ.प्र. (कारागृह)

कोडाला, जि. गंजाम, ओड़िशा (कारागृह)

लुधियाना (कारागृह)

पटियाला, पंजाब (कारागृह)

रतलाम, म.प्र. (कारागृह)

भोपाल (गरीब बस्ती)

लखीमपुर, उ.प्र. (वृद्धाश्रम)

भिलाई-दुर्ग, छ.ग. (बाल आश्रय)

सहारनपुर, उ.प्र. (नेत्रहीन बच्चे)

भद्रक, ओड़िशा (विकलांग स्कूल)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें। आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : Rishi Prasad ऋषि प्रसाद Rishi Darshan ऋषि दर्शन Lok Kalyan Setu लोक कल्याण सेतु

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक :** धर्मेश जगराम सिंह चौहान **मुद्रक :** विवेक सिंह चौहान **प्रकाशन-स्थल :** संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल :** हरि ॐ मैन्युफेक्चर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक :** श्रीनिवास र. कुलकर्णी